शबे बरात की हक़ीकत

हजरत मुफ़्ती ताकि उस्मानी दब.

हवाला- इस्लाही ख़ुतबात हिन्दी/४.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

शाबान का महीना शुरू हो चूका हे और इस महीने में एक मुबारक रात आने वाली हे जिस का नाम शबे बरात हे चुके इस रात के बारे में बाज़ हज़रात का खियाल ये हे के इस रात की कोई फ़ज़ीलत कुरान और हदीस से साबित नहीं और इस रात में जागना और इस में इबादत को खुसूसी तौर पर अज़रो सवाब का जरिया समज़ना बे बुनियाद हे बल्कि बाज़ हज़रात ने इस रात में इबादत को बिदअत से भी ताबीर किया हे इसलिए लोगो के ज़ेहनो में इस रात के बारे में मुख्तलिफ सवालात पैदा हो रहे हे इसलिए इसके बारे में कुछ अर्ज़ कर देना मुनासिब मालूम हुवा.

दीन इत्तेबा का नाम हे

इस सिलसिले में मुख़्तसर गुज़ारिश ये हे के में आप हज़रात से बार बार ये बात अर्ज़ कर चूका हु के जिस चीज़ का साबुत कुरान में या सुन्नत में या सहाबा किराम (रदी) के असर में ताबेन बुज़रुंगाने दीन के अमल में न हो उसको दिन का हिस्सा समज़ना बिदअत हे और में हमेशा ये भी कहता रहा हु की अपनी तरफ से एक रास्ता घड कर उस पर चलने का नाम दीन नहीं हे बल्कि दीन इत्तेबा का नाम हे.

किसकी इत्तेबा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा सहाबा किराम (रदी) की इत्तेबा ताबेन और बुज़रुंगाने दीन की इत्तेबा अब अगर वाक़ियतां ये बात दुरुस्त हो के इस रात की कोई फ़ज़ीलत साबित नहीं तो बेशक इस रात को कोई खुसूसी एहमियत देना बिदअत होगा जैसा के शबे मेराज के बारे में अर्ज़ कर चूका हु के शबे मेराज में किसी इबादत का ज़िकर कुरान और हदीस में मौजूद नहीं.

इस रात की फ़ज़ीलत बे-बुनियाद

लेकिन वाकिया ये हे के शबे बरात के बारे में ये कहना बिलकुल गलत हे के उसकी कोई फ़ज़ीलत हदीस से साबित नहीं हकीकत ये हे के दस सहाबए किराम (रदी) से हदीस मन्क़ूल हे जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस रात की फ़ज़ीलत बयां फ़रमाई इन में से बाज़ हदीस सनद के एतेबार से बेशक कुछ कमज़ोर हे और हादीस के कमज़ोर होने की वजह से बाज़ उल्माने ये कह दिया के इस रात की फ़ज़ीलत बे-असल हे लेकिन हज़राते मुहद्दिसीन और फुकहा का ये फैसला हे के अगर एक रिवायत सनद के एतेबार से कमज़ोर हो लेकिन इसकी टाइड बहुत सी हदीस से हो जाये तो इसकी कमज़ोरी दूर हो जाती हे और जैसा के मेने अर्ज़ किया के दस सहाबए किराम (रदी) से इसकी फ़ज़ीलत में रिवायत मौजूद हे लिहाज़ा जिस रात की फ़ज़ीलत में दस सहाबए किराम (रदी) से रिवायत मरवी हो उसको

बे-बुनियाद और बे-असल कहना बिलकुल गलत हे.

शबे बरात और पहली सदी हिजरी के लोग

उम्मते मुस्लिमा के जो इब्तेदाए इस्लाम के जो लोग हे यानि सहाबए किराम (रदी) का दौर ताबेन का दौर तबे-ताबेन का दौर उसमे भी इस रात की फ़ज़ीलत से फायदा उठाने का एहतेमाम किया जाता रहा हे लोग इस रात के अंदर इबादत का खुसूसी एहतेमाम करते रहे हे लिहाज़ा इसको बिदअत कहना या बे-बुनियाद और बे-असल कहना दुरुस्त नहीं सहीह बात यही हे के ये फ़ज़ीलत वाली रात हे इस रात में जागना इसमें इबादत करना सवाब का जरिया हे और इसकी खुसूसी एहमियत हे.

कोई खास इबादत मुक़र्रर नहीं

अल्बत्ता ये बात दुरुस्त हे के इस रात में इबादत का कोई खास तरीका मुक़र्रर नहीं के फलां तरीके से इबादत की जाये जैसे बाज़ लोगो ने अपनी तरफ से एक तरीका घड़कर ये कह दिया के शबे बरात में इस खास तरीके से नमाज़ पढ़ी जाती हे मसलन पहली रकत में फलां सूरा इतनी मर्तबा पढ़ी जाये और दूसरी रकत में फलां सूरत इतनी मर्तबा पढ़ी जाये वगैरा वगैरा इस का कोई साबुत नहीं ये बिलकुल बे बुनियाद बात हे बल्कि नफिल इबादत जिस कदर हो सके वो इस रात में अंजाम दी जाये नफिल नमाज़ पढ़े कुरान की तिलावत करे ज़िकर करे तस्बीह पढ़े दुआए करे ये सारी इबादते इस रात में की जा सकती हे लेकिन कोई खास तरीका साबित नहीं.

शबे बरात में कब्रस्तान जाना

इस रिवायत में एक और अमल हे जो एक रिवायत से साबित हे वो ये के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नतुल बाकि में तशरीफ़ ले गये अब चुके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस रात में जन्नतुल बाकि में तशरीफ़ ले गये थे इसलिए मुस्लमान इस बात का एहतेमाम करने लगे के शबे बरात में कब्रस्तान जाये लेकिन मेरे वलीद हज़रात मुफ़्ती शफी साहब (रह) एक बड़ी काम की बात बयां फ़रमाया करते थे हमेशा याद रखनी चाहिए फरमाते थे के जो चीज़ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिस दर्ज़े में साबित हो उसी दर्ज़े में उसे रखना चाहिए इस से आगे नहीं बढ़ना चाहिए लिहाज़ा सारी हयाते तैय्यबा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक मर्तबा जन्नतुल बाकि जाना मरवी हे के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शबे बरात में जन्नतुल बाकि तशरीफ़ ले गये चुके एक मर्तबा जाना मरवी हे इसलिए तुम भी अगर ज़िन्दगी में एक मर्तबा चले जावो तो ठीक हे लेकिन हर शबे बरात में जाने का एहतेमाम करना इंतेज़ाम करना और इसको ज़रूरी समज़ना और इसको शबे बरात के अरकान में दाखिल करना और इसको शबे बरात का लाज़मी हिस्सा समज़ना और इसके बगैर ये समज़ना के शबे बरात नहीं हुयी ये इसको उसके दर्ज़े से आगे बढ़ने वाली बात हे लिहाज़ा अगर कभी कोई शख्स इस नुकते नज़र से कबरस्तान चला गया के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़

ले गये थे में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा में जा रहा हु तो इंशाअल्लाह अज़रो सवाब मिलेगा लेकिन इसके साथ ये करो के कभी न भी जावो एहतेमाम और इंतिज़ाम न करो पाबन्दी न करो ये दर हकीकत दीन की समाज की बात हे के जो चीज़ जिस दर्ज़े में साबित हो उसको उसी दर्ज़े में रखो उस से आगे मत बढ़ावा और उसके आलावा दूसरी नफिल इबादत अदा कर लो.

नवाफिल घर पर अदा करे

मेने सुना हे के बाज़ लोग इस रात में और शबे कदर में नफिलो की जमात करते हे पहले सिर्फ शबीना जमात के साथ होता थी अब सुना हे के सलातुत्तस्बीह की भी जमात होने लगी हे ये सलातुत्तस्बीह की जमात किसी तरह भी साबित नहीं न जाइज हे. इसके बारे में एक उसूल सुन लीजिए जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये बयां फ़रमाया के फ़र्ज़ नमाज़ के आलावा और इन नमाज़ो के आलावा जो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बजमत अदा करना साबित हे मसलन तरावीह सूरज ग्रहण और बारिश तलब की नमाज़ इनके आलावा हर नमाज़ के बारे में अफ़ज़ल ये हे के इंसान अपने घर में अदा करे सिर्फ फ़र्ज़ नमाज़ की खुसूसियत ये हे के इसके अंदर सिर्फ अफ़ज़ल नहीं बल्कि सुन्नते मुअक्किदा वाजिब के करीब हे के उसको मस्जिद में जाकर जमात से अदा करे लेकिन सुन्नत और

नफिल में असल कायदा ये हे के इंसान अपने घर में अदा करे लेकिन जब फुकहा ने ये देखा के लोग घर जाकर बाज़ अवकात सुन्नतों को छोड़ देते हे इसलिए उन्होंने ये भी फार्मा दिया के अगर सुन्नते छूटने का खौफ हो तो मस्जिद ही में पढ़ लिया करे ताके छूट ना जाये वरना असल कायदा यही हे के घर में जाकर अदा करे और नफिल के बारे में तमाम फुकहा का इस पर इज्मा हे के नफिल नमाज़ में अफ़ज़ल ये हे के अपने घर में अदा करे और नफिलो की जमात हनफ़िया के नज़दीक मकरूहे तहरीमी और नाजाइज़ हे यानि अगर जमात से नफिल पढ़ले तो सवाब तो क्या मिलेगा उल्टा गुनाह मिलेगा.

फ़र्ज़ नमाज़ जमात के साथ अदा करे

बात दर असल ये हे के फ़राइज़ दीन का शीअर हे दीन की अलामत हे लिहाज़ा उनको जमात के साथ मस्जिद में अदा करना ज़रूरी हे कोई आदमी ये सोच करके अगर में मस्जिद में जमात के साथ नमाज़ पढूगा तो इस में रियाकारी का अंदेशा हे इसलिए में घर ही में नमाज़ पड़ लू इसके लिए ऐसा करना जाइज नहीं इसका हुकम ये हे के मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ो इसलिए के इसके जरिया दीने इस्लाम का एक शीअर ज़ाहिर करना मकसूद हे दिने इस्लाम की एक शौकत का मुज़ाहरा मकसूद हे इसलिए इसको मस्जिद ही में अदा करो.

नवाफिल में तन्हाई मकसूद है

लेकिन नफिल एक ऐसी इबादत हे जिसका ताल्लुक

बस बन्दों और उस के परवरदिगार से हे बस तुम हो और तुम्हारा अल्लाह परवरदिगार हो जैसा के हज़रात अबू बक्कर सिद्दीक (रदी) के वाकिअ में आता हे के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा के तिलावत इतनी आहिस्ता से क्यों करते हो उन्होंने जवाब में फ़रमाया के जिस जात से मुनाजात कर रहा हु उसको सुना दिया अब दुसरो को सुनाने की क्या ज़रूरत हे (अबू दाऊद) लिहाज़ा नफिल इबादत का तो हासिल ये हे के वो और उसका परवरदिगार हो कोई तीसरा शख्स दरमियान में न हो अल्लाह ये चाहते हे के मेरा बन्दा डायरेक्ट मुज़से ताल्लुक कायम करे इसलिए नफिल इबादतों में जमात और इज्तेमा को मकरुह करार दे दिया और हुकम दे दिया के अकेले अकेले आवो तन्हाई और खल्वाट में आवो और हम से बराहे रास्त राब्ता कायम करो ये खल्वाट और तन्हाई कितना बड़ा इनाम हे ज़रा गौर तो करो बन्दा को कितने बड़े इनाम से नवाज़ा जा रहा हे के खल्वाट और तन्हाई में हमारे पास आवो.

तन्हाई में हमारे पास आवो

बादशाह का एक आम दरबार होता हे इसी तरह जमात की नमाज़ अल्लाह का आम दरबार हे दूसरा खास दरबार होता हे जो खल्वाट और तन्हाई का होता हे ये अल्लाह का इनाम हे के वो फरमाते हे के जब तुम हमारे आम दरबार में हाज़री देते हो तो अब हम तुम्हे खल्वाट और तन्हाई का भी मौका देते हे अब अगर कोई शख्स इस

तन्हाई के मौका को जलवात में तब्दील कर दे और जमात बना दे तो ऐसा शख्स इस खास दरबार की नेमत की नाकदरी कर रहा हे इसलिए के अल्लाह तो ये फार्मा रहे हे के तुम तन्हाई में आवो हम से मुनाजात करो हम तन्हाई में तुम्हे नवाजेंगे लेकिन तुम एक भीड़ जमा करके ले जा रहे हो.

तुमने इस नेमत की नाकदरी कि

मसलन अगर कोई बादशाह हे तुम उस से मुलाकात के लिए दरबार में गए वो बादशाह तुम से ये कहे के आज रात को नव बजे तन्हाई में मेरे पास आजाना तुमसे कुछ प्राइवेट बात करनी हे जब रात के नव बजे तो आप ने अपने दोस्तों का एक टोला इखट्टा कर लिया और सब दोस्तों को लेकर बादशाह के दरबार में हाज़िर हो गए बताइये के अपने उस बादशाह की कदर की या नाकदरी की उसने तो तुम्हे ये मौका दिया था के तुम तन्हाई में मेरे पास आवो तुम से तन्हाई में बाटे करनी थी तुम्हे खल्वाट में खास मुलाकात का मौका देना था और अपने साथ राब्ता और ताल्लुक बराबर करना था और तुम पूरी एक जमात बना कर इसके पास ले गये तो ये तुमने उसकी नाकदरी की. इसलिए इमाम अबू हनीफा (रह) फरमाते हे के नफिल इबादत की इस तरह नाकदरी न करो नफिल इबादत की कदर ये हे के तुम हो और तुम्हारा अल्लाह हो तीसरा कोई नहो लिहाज़ा नफिल इबादत जितनी भी हे उन सब के अंदर उसूल ये बयां फार्मा दिया के तन्हाई में

अकेले इबादत करो इसके अंदर जमात मकरूहे तहरीमी हे इसलिए के अल्लाह की तरफ से तो ये आवाज़ दी जा रही हे के कोई हे जो मुज़से मगफिरत तलब करे तो में उसकी मगफिरत करू यहाँ लफ़्ज़ मुस्तगफार मुफरद सैगा एक वचन इस्तेमाल किया यानि कोई तन्हाई में मगफिरत तलब करने वाला हे तन्हाई में मुज़से रहमत तलब करने वाला हे अब अल्लाह तो ये फार्मा रहे हे के तन्हाई में मेरे पास आकर मुज़से मांगो लेकिन हमने ये क्या के शबीना का इंतेज़ाम किया रौशनी लगाई और लोगो को इसकी दावत दी के मेरे पास आकर मेरी इस खल्वाट में शरीक हो जावो हकीकत में ये अल्लाह के इनाम की नाकदरी हे लिहाज़ा शबीना हो या सलातुत्तस्बीह की जमात हो या कोई और नफिल जमात हो ये सब नाजाइज़ हे.

गोशाए तन्हाई के लमहात

ये फ़ज़ीलत वाली राते शोर शग़फ़ की राते नहीं हे मेले ठेले की राते नहीं ये इज्तेमा की राते नहीं बल्कि ये राते इसलिए हे के गोशाए तन्हाई में बैठकर तुम अल्लाह के साथ ताल्लुक कायम करलो और तुम्हारे और उसके दरमियान कोई नहो. लोग ये उज़ार करते हे के अगर तन्हाई में इबादत करने बैठते हे तो नीद आ जाती हे मस्जिद में शबीना और रौशनी होती हे और एक भीड़ होती हे जिसकी वजह से नीद पर काबू पाने में आसानी हो जाती हे अरे इस बात पर यकीन करो के अगर तुम्हे

चन्द लम्हात गोशाए तन्हाई में अल्लाह से बाटे करना मयस्सर आ गए तो वो चन्द घडिया उस सारी रात से कई गुना बेहतर हे जो तुम ने मेले में गुज़री इसलिए के तन्हाई में जो वक्त गुज़ारा वो सुन्नत के मुताबिक गुज़ारा और मेले में जो वक्त गुज़ारा वो ख़िलाफ़े सुन्नत गुज़ारा वो रात इतनी कीमती नहीं जितने वो लमहात कीमती हे जो आपने इखलास के साथ दिख्लावे के बगैर गोशाए तन्हाई में गुज़र लिए.

वहा घंटे शुमार नहीं होते

मे हमेशा कहता रहा हु के अपनी अकाल के मुताबिक काम करने का नाम दीन नहीं अपना शौक पूरा करने का नाम दीन नहीं बल्कि अल्लाह के कहने पर अमल करने का नाम दीन हे उनकी पैरवी और इत्तेबा का नाम दीन हे ये बतावो के क्या अल्लाह तुम्हारे घंटे शुमार करते हे के तुमने मस्जिद में कितने घंटे गुज़ारे वहा घंटे शुमार नहीं किये जाते वहा तो इखलास देखा जाता हे अगर चन्द लम्हात भी इखलास के साथ अल्लाह के साथ राब्ता में मयस्सर आ गए तो वो चन्द लम्हात ही इंशाअल्लाह बेडा पर करदेंगे लेकिन अगर आपने इबादत में कई घंटे गुज़र दिए मगर सुन्नत के खिलाफ गुज़ारे तो उस का कुछ भी हासिल नहीं.

इखलास मतलूब हे

मेरे शैख़ हज़रात डॉक्टर अब्दुल हाई साहब (रह) बड़े कैफ के आलम में फ़रमाया करते थे के जब तुम लोग सजदा

में जाते हो तो सजदा में सुब्हाना रब्बियल आला कई मर्तबा कहते हे लेकिन मशीन की तरह ज़ुबान पर ये तस्बीह जारी होती हे लेकिन अगर किसी दिन ये कलमा सुब्हाना रब्बियल आला एक मर्तबा इखलास के साथ दिल से निकल गया तो यकीन कीजिए के अल्लाह इस एक मर्तबा सुब्हाना रब्बियल आला की बदौलत बेडा पर करदेंगे. लिहाज़ा ये मत खियाल करो के अगर तनहा घर में रहकर इबादत करेंगे तो नीद आ जाएगी इसलिए के अगर नीद आ जाये तो सो जावो लेकिन चन्द घडिया जो इबादत में गुज़ारो वो सुन्नत के मुताबिक गुज़ारो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत ये हे के फरमाते हे के अगर कुरान शरीफ पढ़ते पढ़ते निंद आ जाये तो सो जावो और सो कर थोड़ी सी नीद पूरी करलो और फिर उठ जावो इसलिए के कही ऐसा न हो के नीद की हालत में कुरान पड़ते हुवे तुम्हारे मुंह से कोई लफ़्ज़ गलत निकल जाये लिहाज़ा एक आदमी सारी रात सुन्नत के खिलाफ जाग रहा हे और दूसरा आदमी सिर्फ एक घंटा जागा लेकिन सुन्नत के मुताबिक जागा और अपने परवरदिगार के हुकम के मुताबिक जागा तो ये दूसरा शख्स पहले शख्स से कई दर्ज़ा बेहतर हे.

हर इबादत को एक हद पर रखो

इसलिये के अल्लाह के यहाँ अमल की गिनती नहीं हे बल्कि अमल का वज़न हे वह तो ये देखा जायेगा के इस अमल में कितना वज़न हे लिहाज़ा अगर तुमने गिनती

के एतेबार से अमल तो बहुत कर लिए लेकिन उनमे वज़न पैदा नहीं किया तो उसका कोई फायदा नहीं इसलिए फ़रमाया के नीद आ जाये तो सो जावो और फिर अल्लाह तौफीक दे तो उठकर फिर इबादत में लग जावो लेकिन सुन्नत के खिलाफ काम न करो लिहाज़ा जो इबादत जमात के साथ जिस हद तक साबित हो उसी हद तक करो. लिहाज़ा अल्लाह ने तन्हाई में मुलाकात का जो एज़ाज़ बख्शा हे ये मामूली एज़ाज़ नहीं हे उसकी कदर करनी चाहिए.

औरतो की जामत

एक मसला औरतो की जमात का हे मसला ये हे के औरतो की जमात पसंदीदा नहीं हे चाहे वो फ़र्ज़ नमाज़ की जमात हो या सुन्नत की हो या नफिल की हो इसलिए के अल्लाह ने औरतो को ये हुकम फ़रमाया के अगर तुम्हे इबादत करनी हे तो तन्हाई में करो जमात औरतो के लिए पसंदीदा नहीं जैसा के मेने अर्ज़ किया के दीन असल में शरीअत के इत्तेबा का नाम हे अब ये मत कहो के हमारा तो इस तरह इबादत करने को दिल चाहता हे इस दिल के चाहने को छोड़ दो इसलिए दिल तो बहुत सारी चीज़ो को चाहता हे और सिर्फ दिल के चाहने की वजह से कोई चीज़ दीन में दाखिल नहीं हो जाती जिस बात को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पसंद नहीं किया उसको महज़ दिल चाहने की वजह से न करना चाहिए.

शबे बरात और हलवा

बहाराहल ये शबे बरात अल्हम्दुलिल्लाह फ़ज़ीलत की रात हे और इस रात में जितनी इबादत तौफीक हो इतनी इबादत करनी चाहिए बाकि जो बेकार रिवाज इस रात में हलवा वगैरा पकने की शुरू कर ली गई हे उनको बयां करने की ज़रूरत नहीं इसलिए के शबे बरात का हलवा से कोई ताल्लुक नहीं असल बात ये हे के शैतान हर जगह अपना हिस्सा लगा लेता हे उसने सोचा के इस शबे बरात में मुसलमानो के गुनाहो की मगफिरत की जाएगी चुनांचे एक रिवायत में आता हे के इस रात में अल्लाह इतने इंसानो की मगफिरत फरमाते हे जितने कबीले कलब की बकरिया के जिसम पर बल हे. शैतान ने सोचा के अगर इतने सरे आदमियों की मगफिरत हो गयी फिर तो में लूट गया इसलिए उसने अपना हिस्सा लगा दिया चुनांचे उसने लोगो को ये सीखा दिया के शबे बरात आये तो हलवा पक्या करो वैसे तो सरे साल के किसी दिन भी हलवा पकाना जाइज और हलाल हे जिस शख्स का जब दिल चाहे पका कर खाले लेकिन शबे बरात से इस का क्या ताल्लुक न कुरान में इस का सुबूत हे न हदीस में इसके बारे में कोई रिवायत न सहाबए किराम (रदी) के असर में न ताबेन के अमल में और न बुज़रुंगाने दीन के अमल में कही इसका तज़किरा लेकिन शैतान ने लोगो को हलवा पकने में लगा दिया चुनांचे सब लोग पकने और खाने में लग गए अब ये हल हे के इबादत का इतना एहतेमाम नहीं जितना हलवा पकने का हे.

बिदअत की खसियत

एक बात हमेशा याद रखने की हे वो ये के मेरे वालिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफी साहब (रह) फ़रमाया करते थे के बिदअत की खासियत ये हे के जब आदमी बिदअत के अंदर मुब्तेला हो जाता हे तो उसके बाद फिर असल सुन्नत कामो की तौफीक कम हो जाती हे चुनांचे अपने देखा होगा के जो लोग सलातुत्तस्बी की जमात में देर तक खड़े रहते हे वो लोग पांच वक्त की फ़र्ज़ जमातों में कम नज़र आएंगे और जो लोग बिदअत करने के आदी होते हे मसलन हलवा मन्दा करने और कुंडे में लगे हुवे हे वो फ़राइज़ से गाफिल होते हे नामज़े कज़ा हो रही हे जमाते छूट रही हे इसकी तो कोई फ़िक्र नहीं लेकिन ये सब कुछ हो रहा हे. अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो सब से ज़ियादा ताकीद इसकी फ़रमाई थी के जब किसी का इन्तेकाल हो जाये तो उसकी मीरास शरीअत के मुताबिक जल्दी तकसीम करो लेकिन अब ये हो रहा हे के मीरास तकसीम करने की तरफ तो ध्यान नहीं हे मगर तीजा हो रहा हे दसवा हो रहा हे चालीसवां हो रहा हे बरसी हो रही हे लिहाज़ा बिदअत की खासियत ये हे के जब इंसान उसके अंदर मुब्तेला होता हे तो सुन्नत से दूर होता चला जाता हे और सुन्नत वाले अमल करने की तौफीक नहीं होती अल्लाह हमें महफूज़ रखे आमीन. बहरहाल इस बेकार कामो और बिदअत से तो बचना चाहिए बाकी रात तो फ़ज़ीलत की रात हे और इस रात के बारे में बाज़ लोगो ने जो खियाल

ज़ाहिर किया हे के इस रात में कोई फ़ज़ीलत साबित नहीं ये खियाल सहीह नहीं हे.

पन्द्र शाबान का रोज़ा

एक मसला शबे बरात के बाद वाले दिन यानि पन्द्र के रोज़ा का हे इसको भी समाज लेना चाहिए वो ये के सरे ज़ख़ीरे हदीस में इस रोज़े के बारे में सिर्फ एक रिवायत में हे के शबे बरात के बाद वाले दिन रोज़ा रखो लेकिन ये रिवायत कमज़ोर हे लिहाज़ा इस रिवायत की वजह से खास इस पन्द्र शाबान के रोज़ा को सुन्नत या मुस्तहब करार देना बाज़ उलमा के नज़दीक दुरुस्त नहीं अलबत्ता पुरे शाबान के महीने में रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत साबित हे लेकिन २८ और २९ शाबान को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोज़ा रखने से मना फ़रमाया हे के रमजान से एक दो रोज़ पहले रोज़ा मत रखो ताके रमजान के रोज़ो के लिए इंसान निशात के साथ तैयार रहे लेकिन १ शाबान से २७ शाबान तक हर दिन रोज़ा रखने में फ़ज़ीलत हे. दूसरा ये के ये पन्द्र तारीख अय्यामे बैज में से भी हे और हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर हर महीने के अय्यामे बैज में तीन दिन रोज़ा रखा करते थे यानि १३,१४,१५, तारीख को लिहाज़ा अगर कोई शख्स इन दो वजह से १५ तारीख का रोज़ा रखे एक इस वजह से के ये शाबान का दिन हे दूसरे इस वजह से के ये १५ तारीख अय्यामे बैज चाँदनी रात में दाखिल हे अगर इस निय्यत से रोज़ा रखले तो

इंशाअल्लाह अज़रो सवाब मिलेगा. लेकिन खास पन्द्र तारीख की खुसूसियत के लिहाज़ से इस रोज़ा को सुन्नत करार देना बाज़ चाँदनी रात उलमा के नज़दीक दुरुस्त नहीं इसी वजह से अक्सर फुकाहे किरामने जहा मुस्तहब रोज़ो का ज़िकर किया हे वह मुहर्रम की १० तारीख के रोज़ा का ज़िकर किया हे यौमे अरफ़ा के रोज़े का ज़िकर किया हे लेकिन पन्द्र शाबान के रोज़ा का अलाहिदा से ज़िकर नहीं किया बल्कि ये फ़रमाया के शाबान के किसी भी दिन रोज़ा रखना अफ़ज़ल हे. बहरहाल अगर इस नुक्ते नज़र से कोई शख्स रोज़ा रखले तो इंशाअल्लाह इस पर सवाब होगा बाकी किसी दिन की कोई खुसूसियत नहीं. जैसा के मेने पहले अर्ज़ किया था के हर मामला को उसकी हद के अंदर रखना ज़रूरी हे हर चीज़ को उसके दर्ज़े के मुताबिक रखना ज़रूरी हे दीन असल में हुदूद की हिफाज़त ही का नाम हे अपनी तरफ से अकाल लगा कर आगे पीछे करने का नाम दीन नहीं लिहाज़ा अगर इन हुदूद की रियात करते हुवे कोई शख्स रोज़ा रखे तो बहुत अच्छी बात हे इंशाअल्लाह उस पर सवाब मिलेगा लेकिन इस रोज़ा को बाकायदा सुन्नत करार देने से परहेज़ करना चाहिए.

बहस और मुबाहसा से परहेज़ करे

ये शबे बरात और उसके रोज़ा का खुलासा हे बस इन बातो को सामने रखते हुवे अमल किया जाये बाकि इस बारे में बहुत ज़ियादा बहस और मुबाहसा में नहीं पड़ना

चाहिए. आज कल ये मसला खड़ा हो गया के अगर किसी ने कोई बात कह दी तो उस पर बहस और मुबाहसा शुरू हो गया हलके होना ये चाहिए था के जब किसी ऐसे शख्स से कोई बात सुनी हे जिस पर आप को एतेमाद और भरोसा हे तो बस उसी पर अमल करलो कोई दूसरा शख्स दूसरी बात कहता हे तो फिर बहस में मत पदों. इसलिए के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहस में पड़ने से मना फ़रमाया हे चुनांचे इमाम मालिक (रह) फरमाते हे के इस किसम के मामलात में आपस में लड़ाई झगड़ा करना या बहस ओ मुबाहसा करना इलम के नूर को ज़ैल कर देता हे हमारे एक शायर अकबर इलाहाबादी मरहूम गुज़रे हे इस बारे में उनका एक शेर बड़ा अच्छा हे वो कहते हे के 'मज़हबी बहस मेने की ही नहीं फालतू अकाल मुझ में थी ही नहीं.' ये मज़हबी बहस जिस में फ़ुज़ूल वक्त जाए हो उस से कुछ हासिल नहीं और जिन लोगो के पास फालतू अकाल होती हे वो इस किसम की बहस और मुबाहसा में पड़ते हे इसलिए हम तो ये कहते हे के जिस आलिम पर तुम को भरोसा हो उसके कहने पर अमल करलो इंशाअल्लाह तुम्हारी नजात हो जाएगी अगर कोई दूसरा अलीम दूसरी बात कह रहा हे तो फिर तुम्हे उस में उलझने की ज़रूरत नहीं बस सीधा रास्ता यही हे.

रमजान के लिए पाक साफ़ हो जावो

बाहरहल हकीकत ये हे के इस रात की फ़ज़ीलत को बे-असल कहना गलत हे और मुझे तो ऐसा लगता हे के

अल्लाह ने ये शबे बरात रमज़ानुल मुबारक से दो हफ्ते पहले रखी हे ये दर-हकीकत रमज़ानुल मुबारक का इस्तेकबाल हे रमजान की प्रैक्टिस हो रही हे रमजान की तैयारी कराई जा रही हे के तैयार हो जावो अब वो मुक़द्दस महीना आने वाला हे जिस में हमारी रहमतो की बारिश बरसने वाली हे जिस में हम मगफिरत के दरवाज़े खोलने वाले हे उसके लिए ज़रा तैयार हो जावो. देखिये जब आदमी किसी बड़े दरबार में जाता हे तो जाने से पहले अपने आपको पाक साफ़ करता हे नाहता धोता हे कपडे वगैरा बदलता हे लिहाज़ा जब अल्लाह का अज़िम दरबार रमजान की सूरत में खुलने वाला हे तो उस दरबार में हाज़री से पहले एक रात दे दी और ये फ़रमाया के आवो हम तुम्हे इस रात के अंदर नहला धुला कर पाक साफ़ करदे गुनाहो से पाक साफ़ करे ताके हमारे साथ तुम्हारा ताल्लुक सही माइने में कायम हो जाये और जब ये ताल्लुक कायम होगा और तुम्हारे गुनाह धुलेंगे तो इसके बाद तुम रमज़ानुल मुबारक की रातो से सहीह माइनो में फ़ैज़याब हो जावोगे इस गरज़ के लिए अल्लाह ने हमें ये रात आता फ़रमाई इसकी कदर पहचान नी चाहिए अल्लाह ताला हमें इस मुबारक रात की कदर करने और इस रात में इबादत की तौफीक आता फरमाए. आमीन.